चतुर्थः पाठः

कारक-परिचयः

जिसके द्वारा वाक्य में क्रिया का प्रयोग किया जाता है, उसे 'कारक' कहते हैं। क्रियते संपाद्यते क्रिया अनेन इति ''कारकम्'' अर्थात् जिसके आधार (नियमों) से क्रिया का सम्पादन किया जाता है, वह 'कारक' है। वाक्ये क्रियाया: साक्षात् अन्वयो येन पदेन भवति, तत् पदं 'कारकम्'। वाक्य में क्रिया की साक्षात् संगति (अन्विति) जिस पद के द्वारा होती है, वह 'कारक' है।

कर्ता कर्म च करणञ्च सम्प्रदानं तथैव च।
अपादानाधिकरणमित्याहुः कारकाणि षट्।

संस्कृते षट् कारकाणि (कर्ता, कर्म, करणम्, सम्प्रदानम्, अपादानम्, अधिकरणम्)। सम्बन्धः सम्बोधनं च कारकं न भवति। सम्बन्ध और सम्बोधन का क्रिया के साथ साक्षात् सम्बन्ध न होने से ये दोनों कारक नहीं माने जाते हैं। जैसे—''**मम पुस्तकम् अस्ति**''। इस वाक्य में 'मम' पद का 'अस्ति' क्रिया के साथ साक्षात् सम्बन्ध नहीं है। इसी तरह ''हे बालक! **त्वम् अत्र आगच्छ**'' इस वाक्य में हे बालक! इस पद का 'आगच्छ' क्रिया के साथ साक्षात् सम्बन्ध न होने से कारक नहीं हैं। बालकः पठति। बालकः पुस्तकं पठति। बालकः मुखेन पुस्तकं पठति। बालकः पुस्तकानां पठनाय पुस्तकालयं गच्छति। बालकः पुस्तकालयात् पुस्तकानि आनयति। पुस्तकालये पुस्तकानि सन्ति। इन छह वाक्यों की रचना जिन नियमों के आधार पर होती है। वे नियम 'कारक' कहलाते हैं।

	कारकम्	**विभक्तिः**	**सूत्रम्**	**वाक्यप्रयोगः**
१.	कर्ता	प्रथमा	**स्वतन्त्रःकर्ता**	**बालकः पठति।**
२.	कर्म	द्वितीया	**कर्तुरीप्सिततमं कर्म**	**बालिका पुस्तकं पठति।**
३.	करणम्	तृतीया	**साधकतमं करणम्**	**बालकः कन्दुकेन क्रीडति।**
४.	सम्प्रदानम्	चतुर्थी	**कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्**	**गुरुः शिष्याय ज्ञानं ददाति।**

५.	अपादानम्	पञ्चमी	**ध्रुवमपायेऽपादानम्**	**वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।**
	सम्बन्धः	षष्ठी	**शेषे षष्ठी**	**बालकस्य पुस्तकम्।**
६.	अधिकरणम्	सप्तमी	**आधारोऽधिकरणम्**	**वृक्षे फलानि सन्ति।**
	सम्बोधनम्	प्रथमा	**सम्बोधने च**	**हे बालक! त्वं पठ।**

कर्तृकारक-प्रयोगः

क्रिया के करने में जो पूर्ण स्वतन्त्र होता है, उसे कर्ता कहते हैं। जैसे—**बालकः पठति।** इस वाक्य में 'पठति' क्रिया का कर्ता 'बालक' है और क्रिया से उक्त होने से उसमें प्रथमा विभक्ति है। प्रातिपदिक, लिङ्ग, वचन और परिमाण में भी प्रथमा विभक्ति होती है। (प्रातिपदिकार्थ-लिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा।) अष्टा० २.३.४६

उदाहरणानि—

रामः पठति। जनः गच्छति। नृपः वदति। पक्षी कूजति। सिंहः गर्जति। मृगी धावति। पत्रं पतति। फलानि पतन्ति। छात्राः गायन्ति। बालिकाः लिखन्ति।

अभ्यासकार्यम्

१. कोष्ठके प्रदत्तपदसाहाय्येन समुचित-कर्तृपदैः अधोलिखितानि वाक्यानि पूरयत।

क. .... धावति। (अश्व)
ख. .... पठति। (बालक)
ग. .... वदन्ति। (बालिका)
घ. .... विकसन्ति। (पुष्प)

२. अधोलिखितानि वाक्यानि समुचितक्रियापदैः पूरयत।

क. कृष्णः .... । (पठ्)
ख. गजः .... । (चल्)
ग. मृगाः .... । (धाव्)
घ. छात्राः.......................... । (लिख्)
ङ. खगाः.......................... । (कूज्)

सम्बोधनम्

हे राम! अत्र आगच्छ। हे बालिके! त्वं पुस्तकं पठ। हे नृपते! त्वं प्रजां पालय। हे भानो! तव प्रकाशः महान्।

इन वाक्यों में हे राम! हे बालिके! हे नृपते! हे भानो! इन पदों में सम्बोधन है। किसी को सम्बोधित (पुकारने) को "सम्बोधन" (सम्+बुध्+ल्युट्) कहते हैं। सम्यक्तया बोधनं (आह्वानं) तत् "सम्बोधनम्"। सम्बोधन में "प्रथमा—विभक्ति" होती है, और उसकी विभक्ति का लोप हो जाता है। जैसे—रामः का, हे राम! बालिका का, हे बालिके! नृपतिः का, हे नृपते! भानुः का, हे भानो! माता का, हे मातः! आदि।

उदाहरणानि—

१. **हे मातृभूमे!** वयं त्वां नमामः।
हे मातृभूमि! हमलोग तुम्हें नमस्कार करते हैं।

२. **हे सखि!** तव मधुरा स्मृतिः मनसि अस्ति।
हे सखि! तुम्हारी मधुर स्मृति मन में है।

३. **हे राजन्!** प्रजाहितं सदा कुरु।
हे राजन्! हमेशा प्रजा का हित करो।

४. **हे धेनो!** तव दुग्धम् अमृतम्।
हे गौ! तुम्हारा दुग्ध अमृत है।

५. **हे दधे!** तव खादनम् पौष्टिकम्।
हे दही! तुमको खाना पौष्टिक है।

६. **हे मधो!** तव माधुर्यं अमृतम्।
हे मधु! तुम्हारा माधुर्य अमृत है।

७. **हे बालक!** तत्र गच्छ।
हे बालक! वहाँ जाओ।

८. **हे छात्र!** शीघ्रं पाठं लिख।
हे छात्र! जल्दी पाठ लिखो।

९. **हे गंगे!** तव जलं शीतलम्।
हे गंगे! तुम्हारा जल शीतल है।

१०. **भो शिष्य!** प्रातःकालो जातः।
हे शिष्य! सवेरा हो गया।

कर्मकारक-प्रयोगः

नियम—कर्तुरीप्सिततमं कर्म। अष्टा. १।४।४९ कर्ता के अभीष्टतम को कर्म कहते हैं। जैसे—**बालकः जलं पिबति।**

इस वाक्य में बालक कर्ता, पिबति क्रिया द्वारा जल को पीना चाहता है। अतः बालक कर्ता का अभीष्ट जल है, जो कर्म पद है। (कर्मणि द्वितीया)। अष्टा० २।३।२ कर्मकारक वाले पद में द्वितीया विभक्ति होती है। क्रियापद का पुरुष व वचन कर्तृ-पद के पुरुष-वचन के अनुसार ही रहता है।

उदाहरणानि—

१. भक्तः **भगवन्तं** भजति।
भक्त भगवान् को भजता है।

२. याज्ञिकः **अग्निहोत्रं** करोति।
याज्ञिक हवन करता है।

३. पुत्रः **पितरं** नमति।
पुत्र पिता को प्रणाम करता है।

४. गुरुः **शिष्यं** पाठयति।
गुरु शिष्य को पढ़ाता है।

५. बालकः **गृहं** गच्छति।
बालक घर जाता है।

६. छात्रः **लेखं** लिखति।
छात्र लेख लिखता है।

उपर्युक्त वाक्यों में स्थूलाक्षरपद कर्म-कारक के उदाहरण हैं, इनमें द्वितीया विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

अभ्यासकार्यम्

१. अधोलिखितेषु उचित-विभक्तिं संयोज्य कोष्ठके प्रदत्त-पदसहायतया रिक्तं स्थानं पूरयत—

क. छात्रा	....	पठति।	(पाठ)
ख. लता	....	गायति।	(गीत)
ग. छात्रः	....	लिखति।	(लेख)
घ. बालकः	....	नमति।	(गुरु)

२. अधोलिखितेषु कोष्ठके प्रदत्तपदसहायतया वाक्यानि समुचितैः कर्तृपदैः पूरयत—

क.	प्रार्थनां कुर्वन्ति।	(बालक)
ख.	जलं पिबन्ति।	(बालिका)
ग.	कृषिं करोति।	(कृषक)
घ.	छात्रान् शिक्षयति।	(शिक्षक)

३. उचितक्रियापदैः अधोलिखितानि कोष्ठके प्रदत्तक्रियापद-सहायतया उचितेन पदेन रिक्तस्थानानि पूरयत—

क. शिष्यः गुरुम्	................।	(नम्)
ख. नरः गृहम्	................।	(गम्)
ग. छात्रः पुस्तकं	................।	(पठ्)
घ. भक्तः भगवन्तं	................।	(भज्)

करणकारकप्रयोगः

नियम—(साधकतमं करणम्।) अष्टा० १।४।४२ क्रिया की सिद्धि में सहायक को करण कहते हैं। करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है। (कर्तृकरणयोस्तृतीया।) अष्टा० २।३।१८ कर्म वाच्य और भाववाच्य के कर्ता में भी तृतीया विभक्ति होती है, क्योंकि यहाँ कर्त्ता स्वतन्त्र है।।

उदाहरणानि—

१. बालकः **कन्दुकेन** क्रीडति।
   बालक गेंद से खेलता है।
२. वृद्धः **दण्डेन** चलति।
   वृद्ध दण्डे से चलता है।
३. छात्रः **कलमेन** लिखति।
   छात्र कलम से लिखता है।
४. नरः **उपनेत्रेण** पश्यति।
५. दिनेशः **कर्णाभ्यां** श्रृणोति
६. सुरेशः **रेलयानेन** गच्छति।
७. महेशः **नासिकया** जिघ्रति।
८. युवकः **पादाभ्यां** धावति।

९. जनः **मनसा** चिन्तयति।

१०. अतिथिः **जलेन** तृप्यति।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखाङ्कित पद करण-कारक के उदाहरण है, जिनमें तृतीया विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

अभ्यासकार्यम्

१. अधोलिखितेषु वाक्येषु रिक्तस्थानपूर्तिं कोष्ठके प्रदत्तमूल-शब्देषु उचितविभक्तिं प्रयुज्य कुरुत—

क. वृद्धः	चलति।	(दण्ड)
ख. जनः	पश्यति।	(नेत्र)
ग. रमेशः......................	चलति।	(कारयान)
घ. छात्रः	पठति।	(पुस्तक)

सम्प्रदानकारक-प्रयोगः

नियम—(कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्।) अष्टा० १।४।३२ दान आदि क्रिया जिसके लिए की जाती है, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। (चतुर्थी सम्प्रदाने।) अष्टा० २।३।१३ सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है।

उदाहरणानि—

१. **विप्राय** धनं यच्छति।
ब्राह्मण के लिए धन देता है।

२. **शिष्याय** ज्ञानं ददाति।
शिष्य को ज्ञान देता है।

३. **दीनेभ्यः** वस्त्राणि वितरति।
गरीबों को वस्त्र बाँटता है।

४. **बालिकायै** पुष्पाणि यच्छति।

५. सज्जनाः **उपकाराय** भवन्ति।

६. ज्ञानिनः **ज्ञानाय** जीवन्ति।

७. विद्यार्थिनः **विद्यायै** पठन्ति।

८. धनिकाः **धनाय** यतन्ते।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखाङ्कित पद सम्प्रदान कारक के उदाहरण है, जिनमें चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है।

अभ्यासकार्यम्

१. अधोलिखितेषु वाक्येषु रिक्तस्थानपूर्तिं कोष्ठके प्रदत्तपदैः मूलपदेषु समुचितां विभक्तिं संयोज्य कुरुत—

क. अध्यापकः	....	ज्ञानं यच्छति।	(छात्र)
ख. पिता	....	आशीषं ददाति।	(पुत्र)
ग. विद्या	....	न भवति।	(विवाद)
घ. नृपः	....	वस्त्राणि वितरति।	(वस्त्रहीन)

अपादानकारक-प्रयोगः

नियम—(ध्रुवमपायेऽपादानम्।) अष्टा० १।४।२४ जिससे कोई वस्तु अलग हो उसे अपादान कहते हैं। (अपादाने पञ्चमी।) अष्टा० २।३।२८ अपादान में पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होता है।

उदाहरणानि—

१. **वृक्षात्** पत्रं पतति।
वृक्ष से पत्ता गिरता है।

२. सादी **अश्वात्** पतति।
घुड़सवार घोड़े से गिरता है।

३. **वृक्षेभ्यः** पुष्पाणि पतन्ति।
वृक्षों से फूल गिरते हैं।

४. सः **स्थानकाद्** आगच्छति।
वह स्टेशन से आता है।

५. नदी **पर्वताद्** निर्गच्छति।

६. शिशुः **सर्पाद्** बिभेति।

उपर्युक्त वाक्यों में स्थूलाक्षर पद अपादान कारक के उदाहरण हैं, जिनमें पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

अभ्यासकार्यम्

१. अधोलिखितेषु-वाक्येषु रिक्तस्थानपूर्तिं कोष्ठके प्रदत्तपदैः उचितविभक्तिं प्रयुज्य कुरुत—

क. सैनिकः	....	पतति।	(अश्व)
ख. फलानि	....	निपतन्ति।	(वृक्ष)
ग. जनाः	....	आगच्छन्ति।	(नगर)

घ. बालकः .... निर्गच्छति। (गृह)

ङ. शशकः .... बिभेति। (सिंह)

सम्बन्ध-प्रयोगः

नियम—(षष्ठी शेषे।) अष्टा० २।३।५० सम्बन्ध का ज्ञान कराने के लिए षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है। (षष्ठी हेतुप्रयोगे।) अष्टा० २।३।२६ हेतु शब्द के साथ भी षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है।

उदाहरणानि—

१. सीता **श्रीरामचन्द्रस्य** पत्नी आसीत्।
   सीता श्री रामचन्द्र की पत्नी थी।

२. **गङ्गायाः** जलम् अस्ति।
   गङ्गा का जल है।

३. **देवदत्तस्य** पुत्रः यज्ञदत्तः।
   देवदत्त का पुत्र यज्ञदत्त है।

४. **संसारस्य** सृष्टिकर्ता ईश्वरः।

५. **अन्नानाम्** उत्पादकः कृषकः।

६. **ग्रन्थस्य** रचयिता लेखकः।

७. **अन्नस्य** हेतोः वसति।

८. **ज्ञानस्य** हेतोः आगच्छति।

९. **रमेशस्य** गृहम् अस्ति।

१०. **धेनोः** दुग्धम्।

उपर्युक्त वाक्यों में स्थूलाक्षर पदों में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग हुआ है, षष्ठी विभक्ति वाले पद सम्बन्ध के वाचक हैं।

अभ्यासकार्यम्

३. अधोलिखितेषु वाक्येषु कोष्ठके प्रदत्तपदे समुचितां विभक्तिं संयोज्य रिक्तस्थानानि पूरयत—

क. .... जलम् अस्ति। (नदी)

ख. लक्ष्मणः .... (पुत्रः)। (दशरथ)

ग. श्रीरामचन्द्रः .... (पतिः) (सीता)

घ. .... रचयिता महाकविकालिदासः। (रघुवंशमहाकाव्य)

ङ. .... ज्ञानं श्रेयस्करम्। (गुरु)

च. .... हेतोः कार्यं करोति। (भोजन)

अधिकरणकारक-प्रयोगः

नियम—(आधारोऽधिकरणम्।) अष्टा० १।४।४५ क्रिया के आधार को अधिकरण कहते हैं। जिस पर या जिसमें क्रिया की जाती है, उसे अधिकरण कहते हैं। (सप्तम्यधिकरणे च।) अष्टा० २।३।३६ अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है।

उदाहरणानि—

१. **विद्यालये** छात्राः भवन्ति।
विद्यालय में छात्र होते हैं।

२. **नगरे** जनाः सन्ति।
नगर में मनुष्य हैं।

३. **वेदेषु** ज्ञानं वर्तते।
वेदों में ज्ञान है।

४. साधोः **धर्मे** रतिः।
साधु की धर्म में रति है।

५. **मार्गे** कण्टकानि सन्ति।
मार्ग में काँटें हैं।

६. **बाल्यकाले** विद्याभ्यासः करणीयः।
बचपन में विद्या का अभ्यास करना चाहिए।

७. **वृक्षेषु** वानराः कूर्दन्ति।
पेड़ों पर बन्दर कूदते हैं।

८. **पुस्तकालयेषु** पुस्तकानि भवन्ति।
पुस्तकालयों में पुस्तकें हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखाङ्कित पद अधिकरण कारक के उदाहरण हैं, जिनमें सप्तमी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

अभ्यासकार्यम्

४. अधोलिखितेषु वाक्येषु कोष्ठके प्रदत्तपदे समुचितां विभक्तिं प्रयुज्य रिक्त-स्थानानि पूरयत—

क. .... छात्राः पठन्ति। (विद्यालय)

ख. .... पुष्पाणि विकसन्ति। (लता)

ग. पापिनां रुचिः........... भवति। (पाप)

घ. शीतलता................. भवति। (जल)

ङ .... दया अस्ति। (सज्जन)

—::०::—